

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

26-फरवरी-2021 13:45 IST

**दूसरे खेलो इंडिया नेशनल विंटर गेम्स के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ**

नमस्कार !!

गुलमर्ग की वादियों में अभी भले ही सर्द हवा हो, लेकिन आपकी गर्मजोशी, आपकी ऊर्जा हर हिन्दुस्तानी महसूस भी कर सकता है और देख भी रहा है। आज से खेलो इंडिया- Winter Games का दूसरा संस्करण शुरू हो रहा है। ये International Winter Games में भारत की प्रभावी उपस्थिति के साथ ही जम्मू कश्मीर को इसका एक प्रमुख हब बनाने की तरफ बहुत बड़ा कदम है। मैं जम्मू कश्मीर को और देशभर से आए सभी खिलाड़ियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

देश के अलग-अलग हिस्सों से आए आप सभी खिलाड़ी, एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को भी मजबूत कर रहे हैं। मुझे बताया गया है कि इस बार Winter Games में हिस्सा लेने वाले राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की संख्या दोगुनी से भी ज्यादा हो गई है। ये Winter Games की तरफ देशभर में बढ़ते रुझान, बढ़ते उत्साह को प्रदर्शित करता है। पिछली बार जम्मू कश्मीर की टीम ने इनमें बेहतरीन प्रदर्शन किया था। मुझे विश्वास है कि इस बार बाकी टीमों की तरफ से जम्मू कश्मीर की टैलेंटेड टीम को और बेहतर चुनौती भी मिलेगी और देशभर से आए खिलाड़ी, जम्मू कश्मीर के खिलाड़ियों की, उनके कौशल्य को, उनके सामर्थ्य को देखेंगे और उसमें सीखेंगे भी। मुझे ये भी भरोसा है कि खेलो इंडिया विंटर गेम्स का अनुभव, Winter Olympics के Podium पर भारत के गौरव को बढ़ाने में बहुत काम आएगा।

साथियों,

गुलमर्ग में हो रहे ये खेल दिखाते हैं कि जम्मू-कश्मीर, शांति और विकास की नई बुलंदियां छूने के लिए कितना तत्पर है। ये Winter Games जम्मू कश्मीर में एक नया Sporting Ecosystem विकसित करने में मदद करेंगे। जम्मू और श्रीनगर में 2 खेलो इंडिया Centers of Excellence और 20 जिलों में खेलो इंडिया सेंटर, युवा खिलाड़ियों के लिए बहुत बड़ी सुविधाएं हैं। ऐसे सेंटर देशभर के हर जिले में खोले जा रहे हैं। यही नहीं, इस आयोजन से जम्मू कश्मीर के पर्यटन को भी नई ऊर्जा, नया उत्साह मिलने वाला है। और हम ये भी देख रहे हैं कि कोरोना की वजह से जो दिक्कतें आई थीं, वो भी धीरे-धीरे पीछे छूट रही हैं।

साथियों,

स्पोर्ट्स सिर्फ एक Hobby या Time Pass नहीं है। स्पोर्ट्स से हम टीम स्प्रिट सीखते हैं, हार में नई राह खोजते हैं, जीत को दोहराना सीखते हैं, संकल्पित होते हैं। स्पोर्ट्स हर एक व्यक्ति के जीवन को गढ़ता है, उसकी जीवनशैली को गढ़ता है। स्पोर्ट्स आत्मविश्वास बढ़ाता है, जो आत्मनिर्भरता के लिए भी उतना ही ज़रूरी है।

साथियों,

विश्व में कोई देश सिर्फ आर्थिक और सामरिक शक्ति से ही बड़ा बनता है, ऐसा नहीं है। इसके कई और भी पहलू हैं। एक वैज्ञानिक अपने छोटे से Innovation से पूरी दुनिया में अपने देश का नाम रोशन कर देता है। ऐसे कई क्षेत्र हैं। लेकिन बहुत ही Organised way में, Structured way में, आज स्पोर्ट्स एक ऐसा क्षेत्र बन गया है जो आज की दुनिया में देश की छवि का भी, देश की शक्ति का भी परिचय कराता है। दुनिया के कई छोटे-छोटे देश, स्पोर्ट्स के कारण विश्व में अपनी पहचान बनाते हैं उस स्पोर्ट्स में अपनी विजय से, पूरे देश में प्रेरणा और ऊर्जा भर देते हैं। और इसलिए, स्पोर्ट्स को सिर्फ हार-जीत का कंपटीशन नहीं कहा जा सकता। स्पोर्ट्स, सिर्फ पदक और परफॉर्मंस तक सीमित है, ऐसा भी नहीं है। स्पोर्ट्स का एक वैश्विक रूप है। क्रिकेट के क्षेत्र में तो हम भारत में इस बात को महसूस करते हैं लेकिन ये सभी अंतरराष्ट्रीय खेलों पर लागू होता है। इसी विजन के साथ बीते वर्षों में देश के Sports eco-system से जुड़े रिफॉर्म किए जा रहे हैं।

खेलो इंडिया अभियान से लेकर ओलंपिक पोडियम स्कीम तक, एक Holistic Approach के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं। ज़मीनी स्तर से टैलेंट की पहचान करके उसको सबसे बड़े मंच तक पहुंचाने के लिए सरकार स्पोर्ट्स प्रोफेशनल्स की Hand Holding भी कर रही है।

टैलेंट की पहचान से लेकर टीम सेलेक्शन तक, ट्रांसपेरेंसी सरकार की प्राथमिकता है। जिन खिलाड़ियों ने जीवन भर देश का मान-सम्मान बढ़ाया, उनका भी मान-सम्मान बढ़े, उनके अनुभव का लाभ नए खिलाड़ियों को मिले, ये भी सुनिश्चित किया जा रहा है।

साथियों,

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी स्पोर्ट्स को बहुत ज्यादा महत्व दिया गया है। पहले स्पोर्ट्स को सिर्फ Extra Curricular एक्टिविटी माना जाता था, अब स्पोर्ट्स Curriculum का हिस्सा होगा। Sports की grading भी बच्चों की शिक्षा में काउंट होगी। ये Sports के लिए, हमारे विद्यार्थियों के लिए बहुत बड़ा रिफॉर्म है। साथियों, देश में आज स्पोर्ट्स के उच्च शिक्षा संस्थान और स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी खोली जा रही हैं। बल्कि अब इस दिशा में सोचने का समय है कि sports sciences और sports management को हम स्कूल के स्तर तक कैसे ले जाएं। ये हमारे युवाओं के लिए बेहतर करियर के अवसर तो देगा ही, Sports Economy में भी भारत की हिस्सेदारी को बढ़ाएगा।

मेरे युवा साथियों,

जब आप खेलो इंडिया- Winter Games में अपनी प्रतिभा दिखाएं, तो ये भी याद रखिएगा कि आप सिर्फ

एक खेल का ही हिस्सा नहीं हैं, बल्कि आप आत्मनिर्भर भारत के ब्रांड एंबेसेडर भी हैं। आप जो मैदान में कमाल करते हैं, उससे दुनिया में भारत को पहचान मिलती है। इसलिए जब भी आप मैदान में उतरें, तो भारतभूमि को अपने मन और आत्मा में हमेशा रखें। इससे आपका खेल ही नहीं, बल्कि आपका व्यक्तित्व भी निखर जाएगा। जब भी आप खेल के मैदान में उतरते हैं, तो विश्वास करिए आप अकेले नहीं होते, 130 करोड़ देशवासी आपके साथ होते हैं।

एक बार फिर इस खेल महोत्सव को, इस खुशनुमा वातावरण में आप एंजॉय भी कीजिए और परफॉर्म भी कीजिए। मेरी एक बार फिर आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं। मैं माननीय मनोज सिन्हा जी, किरण रिजिजू जी, दूसरे सभी आयोजकों को और जम्मू कश्मीर की जनता को इस सुंदर आयोजन के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

धन्यवाद !!

\*\*\*\*\*

DS/AKJ/BM

प्रधानमंत्री कार्यालय

# टॉय-केथॉन -2021 के अवसर पर प्रधान मंत्री के भाषण का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 24 JUN 2021 1:54PM by PIB Delhi

मुझे आप लोगों की बातें सुनकर के बहुत अच्छा लगा और मुझे खुशी है आज हमारे साथी मंत्री पियूष जी, संजय जी, ये सारे लोग भी हमारे साथ हैं और साथियों 'टॉय-केथॉन' में जो देशभर से प्रतिभागी हैं, अन्य जो महानुभव हैं और भी आज इस कार्यक्रम को जो देख रहे हैं।

देखिए हमारे यहां कहा जाता है-'साहसे खलु श्री: वसति'। यानि साहस में ही श्री रहती है, समृद्धि रहती है। इस चुनौतीपूर्ण समय में देश के पहले टॉय-केथॉन का आयोजन इसी भावना को मजबूत करता है। इस 'टॉय-केथॉन' में हमारे बाल मित्रों से लेकर, युवा साथियों, टीचर्स, स्टार्ट अप्स और उद्यमियों ने भी बहुत उत्साह से हिस्सा लिया है। पहली बार ही डेढ़ हजार से ज्यादा टीमों का ग्रैंड फिनाले में शामिल होना, ये अपने आप में उज्ज्वल भविष्य के संकेत देता है। ये Toys और games के मामले में आत्मनिर्भर भारत अभियान को भी मजबूती देता है। इसमें कुछ साथियों के बहुत अच्छे आइडियाज भी उभर कर के आगे आए हैं। अभी कुछ साथियों के साथ मुझे बातचीत करने का अवसर भी मिला। मैं इसके लिए फिर से एक बार बधाई देता हूँ।

साथियों,

बीते 5-6 वर्षों में हैकाथॉन को देश की समस्याओं के समाधान का एक बड़ा प्लेटफॉर्म बनाया गया है। इसके पीछे की सोच है- देश के सामर्थ्य को संगठित करना, उसे एक माध्यम देना। कोशिश ये है कि देश की चुनौतियों और समाधान से हमारे नौजवान का सीधा कनेक्ट हो। जब ये कनेक्ट मजबूत होता है तो हमारी युवा शक्ति की प्रतिभा भी सामने आती है और देश को बेहतर समाधान भी मिलते हैं। देश के पहले 'टॉय-केथॉन' का मकसद भी यही है। मुझे याद है, मैंने खिलौनों और डिजिटल गेमिंग की दुनिया में आत्मनिर्भरता और लोकल सोल्यूशंस के लिए युवा साथियों से अपील की थी। उसका एक पॉजिटिव रिस्पॉन्स देश में देखने को मिल रहा है। हालांकि चंद लोगों को ये भी लगता है कि खिलौने ही तो हैं, इनको लेकर इतनी गंभीर चर्चा की ज़रूरत क्यों है? असल में ये Toys, ये Games, हमारी मानसिक शक्ति, हमारी क्रिएटिविटी और हमारी अर्थव्यवस्था पर, ऐसे अनेक पहलुओं को प्रभावित करते हैं। इसलिए इन विषयों की बात भी उतनी ही आवश्यक है। हम सब जानते हैं कि बच्चे की पहली पाठशाला अगर परिवार होता है तो, पहली किताब और पहला दोस्त, ये खिलौने ही होते हैं। समाज के साथ बच्चे का पहला संवाद इन्हीं खिलौनों के माध्यम से होता है। आपने देखा होगा, बच्चे खिलौनों से बातें करते रहते हैं, उनको instruction देते हैं, उनसे कुछ काम करवाते हैं। क्योंकि उसी से उसके सामाजिक जीवन की एक प्रकार से शुरुआत होती है। इसी तरह, ये Toys, ये बोर्ड गेम्स, धीरे-धीरे उसकी स्कूल लाइफ का भी एक अहम हिस्सा बन जाते हैं, सीखने और सिखाने का माध्यम बन जाते हैं। इसके अलावा खिलौनों से जुड़ा एक और बहुत बड़ा पक्ष है, जिसे हर एक को जानने की ज़रूरत है। ये है Toys और Gaming की दुनिया की अर्थव्यवस्था- Toyconomy आज हम जब बात कर रहे हैं तो Global Toy Market करीब करीब 100 बिलियन डॉलर का है। इसमें भारत की हिस्सेदारी सिर्फ डेढ़ बिलियन डॉलर के आस पास ही है, सिर्फ डेढ़ बिलियन। आज हम अपनी आवश्यकता के भी लगभग 80 प्रतिशत खिलौने विदेशों से आयात करते हैं। यानि इन पर देश का करोड़ों रुपए बाहर जा रहा है। इस स्थिति को बदलना बहुत ज़रूरी है। और ये सिर्फ आंकड़ों की ही बात नहीं है, बल्कि ये सेक्टर देश के उस वर्ग तक, उस हिस्से तक विकास पहुंचाने में सामर्थ्य रखता है, जहां इसकी अभी सबसे ज्यादा ज़रूरत है। खेल से जुड़ा जो हमारा कुटीर उद्योग है, जो हमारी कला है, जो हमारे कारीगर हैं, वो

गांव, गरीब, दलित, आदिवासी समाज में बड़ी संख्या में हैं। हमारे ये साथी बहुत सीमित संसाधनों में हमारी परंपरा, हमारी संस्कृति को अपनी बेहतरीन कला से निखारकर अपने खिलौनों में ढालते रहे हैं। इसमें भी विशेष रूप से हमारी बहनें, हमारी बेटियां बहुत बड़ी भूमिका निभा रही हैं। खिलौनों से जुड़े सेक्टर के विकास से, ऐसी महिलाओं के साथ ही देश के दूर-दराज इलाकों में रहने वाले हमारे आदिवासी और गरीब साथियों को भी बहुत लाभ होगा। लेकिन ये तभी संभव है जब, हम अपने लोकल खिलौनों के लिए वोकल होंगे, लोकल के लिए वोकल होना जरूरी है और उनको बेहतर बनाने के लिए, ग्लोबल मार्केट में कंपिटेंट बनाने के लिए हर स्तर पर प्रोत्साहन देंगे। इसके लिए इनोवेशन से लेकर फाइनेंसिंग तक नए मॉडल विकसित करना बहुत जरूरी है। हर नए आइडिया को Incubate करना जरूरी है। नए Start ups को कैसे प्रमोट करें और खिलौनों की पारंपरिक कला को, कलाकारों को, कैसे नई टेक्नॉलॉजी, नई मार्केट डिमांड के अनुसार तैयार करें, ये भी आवश्यक है। 'टॉय-केथॉन' जैसे आयोजनों के पीछे यही सोच है।

साथियों,

सस्ता डेटा और इंटरनेट में आई तेजी, आज गांव- गांव तक देश को डिजिटली कनेक्ट कर रही है। ऐसे में फिजिकल खेल और खिलौनों के साथ-साथ वर्चुअल, डिजिटल, ऑनलाइन गेमिंग में भी भारत की संभावनाएं और सामर्थ्य, दोनों तेजी से बढ़ रहे हैं। लेकिन जितने भी ऑनलाइन या डिजिटल गेम्स आज मार्केट में उपलब्ध हैं, उनमें से अधिकतर का कॉन्सेप्ट भारतीय नहीं है, हमारी सोच से मेल नहीं खाता है। आप भी जानते हैं कि इसमें अनेक गेम्स के कॉन्सेप्ट या तो Violence को प्रमोट करते हैं या फिर Mental Stress का कारण बनाते हैं। इसलिए हमारा दायित्व है कि ऐसे वैकल्पिक कॉन्सेप्ट डिजाइन हों, जिसमें भारत का मूल चिंतन, जो सम्पूर्ण मानव कल्याण से जुड़ा हुआ हो, वो हो, तकनीकी रूप में Superior हों, Fun भी हो, Fitness भी हो, दोनों को बढ़ावा मिलता रहे। और मैं अभी ये स्पष्ट देख रहा हूँ कि Digital Gaming के लिए जरूरी Content और Competence हमारे यहां भरपूर है। हम 'टॉय-केथॉन' में भी हम भारत की इस ताकत को साफ देख सकते हैं। इसमें भी जो आइडिया सलेक्ट हुए हैं, उनमें मैथ्स और कैमिस्ट्री को आसान बनाने वाले कॉन्सेप्ट हैं, और साथ ही Value Based Society को मजबूत करने वाले आइडियाज भी हैं। अब जैसे, ये जो **आई कॉन्ग्रीटो Gaming** का कॉन्सेप्ट आपने दिया है, इसमें भारत की इसी ताकत का समावेश है। योगसे VR और AI टेक्नॉलॉजी से जोड़कर एक नया गेमिंग सोल्यूशन दुनिया को देना बहुत अच्छा प्रयास है। इसी तरह आयुर्वेद से जुड़ा बोर्ड गेम भी पुरातन और नूतन का अद्भुत संगम है। जैसा कि थोड़ी देर पहले बातचीत के दौरान नौजवानों ने बताया भीकिये कंपीटिटिव गेम, दुनिया में योग को दूर-सुदूर पहुंचाने में बहुत मदद कर सकता है।

साथियों,

भारत के वर्तमान सामर्थ्य को, भारत की कला-संस्कृति को, भारत के समाज को आज दुनिया ज्यादा बेहतर तरीके से समझने के लिए बहुत उत्सुक है, लोग समझना चाहते हैं। इसमें हमारी Toys और Gaming Industry बहुत बड़ी भूमिका निभा सकती है। मेरा हर युवा इनोवेटर से, हर स्टार्ट-अप से ये आग्रह है कि एक बात का बहुत ध्यान रखें। आप पर दुनिया में भारत के विचार और भारत का सामर्थ्य, दोनों की सही तस्वीर रखने की जिम्मेदारी भी है। **एक भारत, श्रेष्ठ भारत** से लेकर **वसुधैव कुटुंबकम** की हमारी शाश्वत भावना को समृद्ध करने का दायित्व भी आप पर है। आज जब देश आज़ादी के 75 वर्ष का अमृत महोत्सव मना रहा है, तो ये Toys और Gaming से जुड़े सभी Innovators और creators के लिए बहुत बड़ा अवसर है। आज़ादी के आंदोलन से जुड़ी अनेक ऐसी दास्तान हैं, जिनको सामने लाना जरूरी है। हमारे क्रांतिवीरों, हमारे सेनानियों के शौर्य की, लीडरशिप की कई घटनाओं को खिलौनों और गेम्स के कॉन्सेप्ट के रूप में तैयार किया जा सकता है। आप भारत के Folk को Future से कनेक्ट करने वाली भी एक मजबूत कड़ी हैं। इसलिए ये जरूरी है कि हमारा फोकस ऐसे Toys, ऐसे गेम्स का निर्माण करने पर भी हो जो हमारी युवा पीढ़ी को भारतीयता के हर पहलू को Interesting और Interactive तरीके से बताए। हमारे Toys और Games, Engage भी करें, Entertain भी करें और Educate भी करें, ये हमें सुनिश्चित करना

है। आप जैसे युवा इनोवेटर्स और क्रिएटर्स से देश को बहुत उम्मीदें हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप अपने लक्ष्यों में जरूर सफल होंगे, अपने सपनों को जरूर साकार करेंगे। एक बार फिर इस 'टॉप-केथॉन' के सफल आयोजन के लिए मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ !

धन्यवाद !

\*\*\*

**DS/SH/AV**

(रिलीज़ आईडी: 1729994) आगंतुक पटल : 420

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Assamese , English , Urdu , Marathi , Bengali , Manipuri , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय



# टोक्यो 2020 पैरालम्पिक खेल के लिए भारतीय पैरा-एथलीट दल के साथ बातचीत के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 17 AUG 2021 2:10PM by PIB Delhi

नमस्कार!

कार्यक्रम में मेरे साथ जुड़ रहे भारत सरकार में हमारे खेल मंत्री श्रीमान अनुराग ठाकुर जी, सभी खिलाड़ी साथियों, सारे कोचेस, और विशेष रूप से अभिभावक आपके माता पिता। आप सभी से बात करके मेरा विश्वास बढ़ गया है कि इस बार पैरालम्पिक गेम्स में भी भारत नया इतिहास बनाने जा रहा है। मैं अपने सभी खिलाड़ियों को और सभी कोचेस को आपकी सफलता के लिए, देश की जीत के लिए ढेरों शुभकामनाएँ देता हूँ।

साथियों,

आपका आत्मबल, कुछ हासिल करके दिखाने की आपकी इच्छा शक्ति मैं देख रहा हूँ असीम है। आप सभी के परिश्रम का ही परिणाम है कि आज पैरालम्पिक्स में सबसे बड़ी संख्या में भारत के athletes जा रहे हैं। आप लोग बता रहे थे कि कोरोना महामारी ने भी आपकी मुश्किलों को जरूर बढ़ाया, लेकिन आपने कभी भी इस क्रम को टूटने नहीं दिया।

आपने उसको भी overcome करने के लिए जो भी आवश्यकता हो उसको भी कर लिया है। आपने अपना मनोबल कम नहीं होने दिया, अपनी प्रैक्टिस को रुकने नहीं दिया। और यही तो सच्ची 'स्पोर्ट्समैन स्पिरिट' है हर हालात में वो यही हमें सिखाती है कि- yes, we will do it! We can do it और आप सबने करके दिखाया भी। सबने करके दिखाया।

साथियों,

आप इस मुकाम तक पहुँचे हैं क्योंकि आप असली चैंपियन हैं। जिंदगी के खेल में आपने संकटों को हराया है। जिंदगी के खेल में आप जीत चुके हैं, चैंपियन हैं। एक खिलाड़ी के रूप में आपके लिए आपकी जीत, आपका मेडल बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन मैं बार बार कहता हूँ कि नई सोच का भारत आज अपने खिलाड़ियों पर मेडल का दबाव नहीं बनाता। आपको बस अपना शत-प्रतिशत देना है, पूरी लगन के साथ, कोई भी मानसिक बोझ के बिना, सामने कितना मजबूत खिलाड़ी है इसकी चिंता किए बिना बस हमेशा याद रखिए और इसी विश्वास के साथ मैदान पर अपनी मेहनत करनी है। मैं जब नया-नया प्रधानमंत्री बना तो दुनिया के लोगों से मिलता था। अब वो तो ऊँचाई में भी हमसे ज्यादा होते हैं। उन देशों को रूतबा भी बढ़ा होता है। मेरा भी बैकग्राउंड आपके जैसा ही था और देश में भी लोग शंका करते थे कि ये मोदी जी को दुनिया का तो कुछ पता नहीं है ये प्रधानमंत्री बन गये क्या करेंगे। लेकिन मैं जब दुनिया के लीडरों से हाथ मिलाता था। तो मैं कभी यह नहीं सोचता था कि नरेन्द्र मोदी हाथ मिला रहा है। मैं यही सोचता था कि 100 करोड़ से भी बड़ी आबादी वाला देश हाथ मिला रहा है। मेरे पीछे 100 करोड़ से ज्यादा देशवासी खड़े हैं। ये भाव रहता था और उसके कारण मुझे कभी भी मेरे कान्फिडेंस को समस्या नहीं आती थी। मैं देख रहा हूँ आपके अंदर तो जिंदगी को जीतने का कान्फिडेंस भी है और गेम जीतना तो आपके लिए बाएं हाथ का खेल होता है। मेडल तो मेहनत से अपने आप आने ही वाले हैं। आपने देखा ही है, ओलम्पिक्स में हमारे कुछ खिलाड़ी जीते, तो कुछ चूके भी। लेकिन देश सबके साथ मजबूती से खड़ा था, सबके लिए cheer कर रहा था।

साथियों,



एक खिलाड़ी के तौर पर आप ये बखूबी जानते हैं कि, मैदान में जितनी फ़िजिकल स्ट्रेंथ की जरूरत होती है उतनी ही मेंटल स्ट्रेंथ भी मायने रखती है। आप लोग तो विशेष रूप से ऐसी परिस्थितियों से निकलकर आगे बढ़े हैं जहां मेंटल स्ट्रेंथ से ही इतना कुछ मुमकिन हुआ है। इसीलिए, आज देश अपने खिलाड़ियों के लिए इन सभी बातों का ध्यान रख रहा है। खिलाड़ियों के लिए 'स्पोर्ट साइकॉलजी' उसपर वर्कशॉप्स और सेमिनार्स इसकी व्यवस्था लगातार करते रहे हैं। हमारे ज्यादातर खिलाड़ी छोटे शहरों, कस्बों और गाँवों से आते हैं। इसलिए, exposure की कमी भी उनके लिए एक बड़ी चुनौती होती है। नई जगह, नए लोग, अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियाँ, कई बार ये चुनौतियाँ ही हमारा मनोबल कम कर देती है। इसीलिए ये तय किया गया कि इस दिशा में भी हमारे खिलाड़ियों को ट्रेनिंग मिलनी चाहिए। मैं उम्मीद करता हूँ कि टोक्यो पैरालम्पिक्स को ध्यान में रखते हुए जो तीन सेशन आपने जॉइन किए, इनसे आपको काफी मदद भी मिली होगी।

साथियों,

हमारे छोटे छोटे गाँवों में, दूर-सुदूर क्षेत्रों में कितनी अद्भुत प्रतिभा भरी पड़ी है, कितना आत्मविश्वास है, आज मैं आप सबको देखकर के कह सकता हूँ कि मेरे सामने प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। कई बार आपको भी लगता होगा कि आपको जो संसाधन सुविधा मिली, ये न मिली होती तो आपके सपनों का क्या होता? यही चिंता हमें देश के दूसरे लाखों युवाओं के बारे में भी करनी है। ऐसे कितने ही युवा हैं जिनके भीतर कितने ही मेडल लाने की योग्यता है। आज देश उन तक खुद पहुँचने की कोशिश कर रहा है, ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष ध्यान दिया जा रहा है। आज देश के ढाई सौ से ज्यादा जिलों में 360 'खेलो इंडिया सेंटर्स' बनाए गए हैं, ताकि स्थानीय स्तर पर ही प्रतिभाओं की पहचान हो, उन्हें मौका मिले। आने वाले दिनों में इन सेंटर्स की संख्या बढ़ाकर एक हजार तक की जाएगी। इसी तरह, हमारे खिलाड़ियों के सामने एक और चुनौती संसाधनों की भी होती थी। आप खेलने जाते थे तो अच्छे ग्राउंड, अच्छे उपकरण नहीं होते थे। इसका भी असर खिलाड़ी के मनोबल पर पड़ता था। वो खुद को दूसरे देशों के खिलाड़ियों से कमतर समझने लग जाता था। लेकिन आज देश में स्पोर्ट्स से जुड़े इनफ्रास्ट्रक्चर का भी विस्तार किया जा रहा है। देश ने खुले मन से अपने हर एक खिलाड़ी की पूरी मदद कर रहा है। 'टार्गेट ओलम्पिक पोडियम स्कीम' के जरिए भी देश ने खिलाड़ियों को जरूरी व्यवस्थाएं दीं, लक्ष्य निर्धारित किए। उसका परिणाम आज हमारे सामने है।

साथियों,

खेलों में अगर देश को शीर्ष तक पहुँचना है तो हमें उस पुराने डर को मन से निकालना होगा जो पुरानी पीढ़ी के मन में बैठ गया था। किसी बच्चे का अगर खेल में ज्यादा मन लगता तो घर वालों को चिंता हो जाती थी कि ये आगे क्या करेगा? क्योंकि एक-दो खेलों को छोड़कर खेल हमारे लिए सफलता या करियर का पैमाना ही नहीं रह गए थे। इस मानसिकता को, असुरक्षा की भावना को तोड़ना हमारे लिए बहुत जरूरी है।

साथियों,

भारत में स्पोर्ट्स कल्चर को विकसित करने के लिए हमें अपने तौर-तरीकों को लगातार सुधारते रहना होगा। आज अंतर्राष्ट्रीय खेलों के साथ साथ पारंपरिक भारतीय खेलों को भी नई पहचान दी जा रही है। युवाओं को अवसर देने के लिए, professional environment देने के लिए मणिपुर के इम्फाल में देश की पहली स्पोर्ट यूनिवर्सिटी भी खोली गई है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी पढ़ाई के साथ साथ खेलों को बराबर प्राथमिकता दी गई है। आज देश खुद आगे आकर 'खेलो इंडिया' अभियान चला रहा है।

साथियों,

आप किसी भी स्पोर्ट्स से जुड़े हों, एक भारत-श्रेष्ठ भारत की भावना को भी मजबूत करते हैं। आप किस राज्य से हैं, किस क्षेत्र से हैं, कौन सी भाषा बोलते हैं, इन सबसे ऊपर आप आज 'टीम इंडिया' हैं। ये स्पिरिट हमारे समाज के हर क्षेत्र में होनी चाहिए, हर स्तर पर दिखनी चाहिए। सामाजिक बराबरी के इस अभियान में, आत्मनिर्भर भारत में मेरे दिव्यांग भाई-बहन देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण भागीदार हैं। आपने ये साबित किया है कि शारीरिक कठिनाई से जीवन रुक नहीं जाना चाहिए। इसलिए आप सभी के लिए, देशवासियों के लिए खासकर के नई पीढ़ी के लिए आप सब बहुत बड़ी प्रेरणा भी हैं।

साथियों,

पहले दिव्यांगजनों के लिए सुविधा देने को वेलफेयर समझा जाता था। लेकिन आज देश इसे अपना दायित्व मानकर काम कर रहा है। इसीलिए, देश की संसद ने 'The Rights for Persons with Disabilities Act, जैसा कानून बनाया, दिव्यांगजनों के अधिकारों को कानूनी सुरक्षा दी। सुगम्य भारत अभियान' इसका एक और बड़ा उदाहरण है। आज सैकड़ों सरकारी buildings, सैकड़ों रेलवे स्टेशन, हजारों ट्रेन कोच, दर्जनों domestic airports के इनफ्रास्ट्रक्चर को दिव्यांग जनों के लिए सुगम बनाया जा चुका है। इंडियन साइन लैंग्वेज की स्टैंडर्ड डिक्शनरी बनाने का काम भी तेजी से चल रहा है। NCERT की किताबों को भी साइन लैंग्वेज में translate किया जा रहा है। इस तरह के प्रयासों से कितने ही लोगों का जीवन बदल रहा है, कितनी ही प्रतिभाओं को देश के लिए कुछ करने का भरोसा मिल रहा है।

साथियों,

देश जब प्रयास करता है, और उसके सुनहरे परिणाम भी हमें तेजी से मिलते हैं, तो हमें और बड़ा सोचने की, और नया करने की प्रेरणा भी उसी में से मिलती है। हमारी एक सफलता हमारे कई और नए लक्ष्यों के लिए हमारा रास्ता साफ कर देती है। इसलिए, जब आप तिरंगा लेकर टोक्यो में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे तो केवल मेडल ही नहीं जीतेंगे, बल्कि भारत के संकल्पों को भी आप बहुत दूर तक ले जाने वाले हैं, उसको एक नई ऊर्जा देने वाले हैं, उसको आगे बढ़ाने वाले हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके ये हौसले, आपका ये जोश टोक्यो में नए कीर्तिमान गढ़ेगा। इसी विश्वास के साथ आप सभी को एक बार फिर ढेरों शुभकामनाएँ। बहुत बहुत धन्यवाद!

\*\*\*\*\*

DS/SH/DK

(रिलीज़ आईडी: 1746636) आगंतुक पटल : 759

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Assamese , English , Urdu , Marathi , Bengali , Manipuri , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam